९. व्यापार

करके देखिए

निम्न जानकारी प्राप्त कीजिए ।

- घर में दैनिक आवश्यक वस्तुओं की सूची बनाइए ।
- इन वस्तुओं का उपयोग कौन-कौन करता है?
- इन वस्तुओं की पूर्ति कहाँ से होती हैं, उसके सामने लिखिए ।
- सूची की वस्तुएँ आप कहाँ से खरीदते हैं?
- इस क्रय-विक्रय की क्रिया को आप क्या कहेंगे?
- वस्तुओं को बेचने वाला दुकानदार वस्तुओं के बदले क्या लेता है?
- ये वस्तुएँ आपने जहाँ से खरीदी हैं, वहाँ ये वस्तुएँ कहाँ से आईं और उसका मूलस्रोत कौन-सा है?

इसकी जानकारी संकलित कीजिए और सूची में वस्तुओं के नाम के आगे लिखिए । प्राप्त की गई जानकारी के विषय पर कक्षा में चर्चा कीजिए ।

भौगोलिक स्पष्टीकरण

उपरोक्त संकलित की गई जानकारी से आपके ध्यान में आएगा कि, हम अपनी आवश्यकता की वस्तुएँ अपनें परिसर की दुकानों, बाजार अथवा मॉल आदि स्थानों से खरीदते हैं । अधिकांश विक्रेता स्वयं किसी भी माल अथवा वस्तु को उत्पादित नहीं करते हैं । वे वस्तुएँ कहीं न कहीं से लेकर आते हैं । ये सभी वस्तुएँ हमारे परिसर में तैयार नहीं होती हैं । ये वस्तुएँ अनेक दूरस्थ स्थानों पर तैयार होती हैं । थोक बाजार केंद्र, कारखानों, कृषि उत्पन्न बाजार समितियों आदि से ये वस्तुएँ सर्वप्रथम चिल्लर विक्रेता और वहाँ से हम तक पहुँचती हैं ।

खोजिए तो

जिस प्रकार अन्य स्थानों से वस्तुएँ आप तक पहुँचती हैं उसी प्रकार आपके गाँव/शहर में तैयार होने वाली कोई विशेष वस्तु/पदार्थ कहाँ-कहाँ भेजा जाता है?

हमारे दैनिक जीवन में विविध आवश्यकताएँ होती हैं। इन आवश्यकताओं को पूर्ण करने के लिए हम विविध वस्तुओं का क्रय करते हैं । क्रय करना अर्थात हम माँग करते हैं ।

इन वस्तुओं की माँग पूर्ण करने के लिए वस्तुओं का उत्पादन किया जाता है । उत्पादक वस्तुओं की आपूर्ति करते हैं अर्थात थोक व्यापारियों को बेचते हैं ।

इस प्रकार वस्तुओं की आवश्यकताएँ पूर्ण करने के लिए वस्तुओं का क्रय-विक्रय किया जाता है । हम वस्तुओं के क्रय करने वाले ग्राहक होते हैं, उसी प्रकार वस्तुओं के उत्पादन व विक्रय करने वाले विक्रेता होते हैं ।

ग्राहक और विक्रेता वस्तुओं का क्रय-विक्रय अथवा लेन-देन करते हैं । इसे ही व्यापार कहा जाता है ।

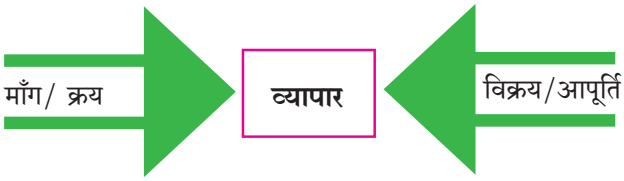

आकृति ९.१ : व्यापार की संकल्पना

व्यापार यह एक आर्थिक क्रिया है । समाज में लोगों का आर्थिक जीवन एक-दूसरे पर निर्भर होता है ।

कोई भी प्रदेश अथवा देश स्वयंपूर्ण (परिपूर्ण) नहीं होता । लोगों की आवश्यकताएँ पूर्ण करने के लिए दो देशों के बीच व्यापार की आवश्यकता होती है । प्रत्येक देश की भौगोलिक स्थिति अलग-अलग होने के कारण प्रत्येक प्रदेश में किसी-न-किसी विशिष्ट वस्तुओं का उत्पादन होता है ।

जिस स्थान पर किसी वस्तु की कमी होती है वहाँ उस वस्तु की माँग की जाती है और जहाँ उस वस्तु का उत्पादन अतिरिक्त होता है वहाँ से वस्तु की आपूर्ति की जाती है । इस प्रकार अतिरिक्त उत्पादन वाले प्रदेश से कम उत्पादन वाले प्रदेश की ओर माँग के अनुसार आपूर्ति की जाती है । जैसे - जम्मू-कश्मीर में उत्पादित होने वाले सेब की भारत के अन्य राज्यों में माँग के अनुसार आपूर्ति की जाती है ।

क्या आप जानते हैं?

व्यापार यह संकल्पना अति प्राचीन काल से अस्तित्व में है । प्राचीन व मध्ययुगीन काल में व्यापार वस्तु विनिमय पद्धति के माध्यम से होता था । उसमें वस्तुओं के बदले वस्तुओं का ही लेन-देन होता था । श्रम के बदले अनाज अथवा अनाज के बदले तेल, नमक, शहद, दूध आदि पदार्थों का लेन-देन होता था। इस व्यापार में मुद्रा का प्रचलन नहीं था । घरों में पुराने वस्त्रों के बदले बर्तन-डिब्बे देने वाले व्यवसायी आज भी दिखाई देते हैं परंतु इन वस्तुओं का उचित मूल्य निर्धारित करने में समस्याएँ निर्माण होती है । प्राचीन काल में भी ऐसी समस्याएँ निर्माण होती थीं । इसके उपाय के रूप में मुद्रा का प्रचलन शुरू हुआ । आज के आधुनिक युग में व्यापार मुद्रा के द्वारा होता है, परंतु आज भी कुछ दुर्गम भागों, आदिवासी जनजातियों में अल्प मात्रा में वस्तु विनिमय पद्धति पाई जाती है ।

वस्तु विनिमय पद्धति

बताइए तो

हमने देखा है कि व्यापार में वस्तुओं का क्रय-विक्रय होता है । परंतु वस्तुओं का लेन-देन न करके भी व्यापार होता है; क्या यह आपको पता है?

- सब्जीवाले को पैसे देकर, सब्जी ली जाती है ।
- पुस्तकों की कीमत देकर पुस्तकें मिलती हैं ।
- परिवहन के साधनों से यात्रा के बदले शुल्क दिया जाता है, उस शुल्क के बदले कौन-सी वस्तु मिलती है?
- डाक्टर, वकील की सलाह के बदले उन्हें शुल्क दिया जाता है । इससे हमें कौन-सी वस्तु मिलती है?
- आप सिनेमा देखनें जाते हैं तो सिनेमाघर में टिकट का शुल्क क्यों देना पड़ता है?
- आप बाल कटवाने जाते हैं तो उसके बदले शुल्क क्यों देना पड़ता है?

भौगोलिक स्पष्टीकरण

उपरोक्त घटकों में जब वस्तुओं का क्रय-विक्रय होता है, तब उसे दृश्य व्यापार कहा जाता है परंतु जब सेवाओं का लेन-देन होता है, तब उसे अदृश्य व्यापार कहा जाता है ।

आकृति ९.२ (अ) : दृश्य व्यापार

आकृति ९.२ (ब) : अदृश्य व्यापार

व्यापार के प्रकार :

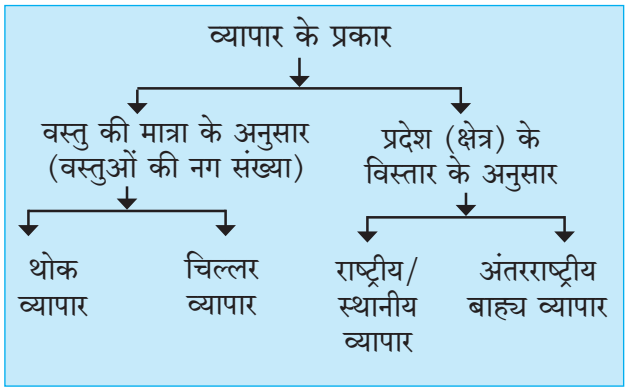

(१) वस्तु की मात्रा के अनुसार : वस्तु की संख्या के अनुसार थोक तथा चिल्लर व्यापार, ऐसे दो प्रकार किए जाते हैं ।

● **थोक व्यापार :** व्यापारी बड़ी मात्रा में वस्तुओं की खरीदी करते हैं । उत्पादक से सीधे यह खरीददारी की जाती है । खरीदे हुए माल को चिल्लर व्यापारियों से विक्रय किया जाता है । इस समय होने वाले व्यापार को थोक व्यापार कहा जाता है । कारखाने, कृषक आदि से थोक व्यापारी बड़े मात्रा में पर वस्तुओं की खरीददारी करता है। जैसे - आम अथवा संतरा के बागान मालिक से थोक व्यापारी पूरे माल की खरीदी करता है ।

● **चिल्लर व्यापार :** बड़े थोक व्यापारी से माल खरीदकर सीधे उपभोक्ता को वस्तुएँ बेची जाती हैं इसे चिल्लर व्यापार कहते हैं । इसमें वस्तुओं की मात्रा कम होती है । जैसे - चिल्लर विक्रय करने वाले दुकानदार, बागानी सब्जियों के विक्रेता आदि ।

(२) क्षेत्र के विस्तार अनुसार : वस्तुओं का क्रय-विक्रय विविध स्तरों पर किया जाता है । उसके आधार पर स्थानीय, विभागीय, राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय ऐसे व्यापार के प्रकार किए जाते हैं ।

● **देशांतर्गत व्यापार (अंतर्गत व्यापार) :** एक ही देश में विभिन्न प्रदेशों के बीच यह व्यापार होता है। देश का क्षेत्रफल, संसाधनों की उपलब्धता, विविधता और वितरण इनका परिणाम (आंतरिक व्यापार) देशांतर्गत व्यापार पर पड़ता है । जनसंख्या का प्रमाण, यातायात तथा संचार के साधनों की सुविधा, लोगों का रहन-सहन, विपणन व्यवस्था, इनका भी परिणाम देशांतर्गत व्यापार पर होता है। भारत में भौगोलिक घटकों की विविधता और अत्यधिक जनसंख्या के कारण बड़ी मात्रा में अंतर्गत व्यापार होता है। अंतर्गत व्यापार का विकास देश के विकास पर निर्भर होता है । आर्थिक विकास अधिक होगा तो व्यापार भी अधिक होता है । आर्थिक विकास और अंतर्गत व्यापार में धनात्मक संबंध होता है ।

● **अंतरराष्ट्रीय व्यापार :** एक देश से दूसरे देश के बीच होने वाले वस्तुओं व सेवाओं का विनिमय अंतरराष्ट्रीय व्यापार कहलाता है । कुछ देशों में विशिष्ट वस्तुओं का अतिरिक्त उत्पादन होता है । वह उत्पादन माँग करने वाले देशों में भेजा जाता है । इससे ही अंतरराष्ट्रीय व्यापार का प्रारंभ हुआ है ।

अंतरराष्ट्रीय व्यापार जब दो देशों के बीच होता है तो उसे **द्विपक्षीय व्यापार** (Bilateral Trade) कहते हैं। जब अंतरराष्ट्रीय व्यापार दो से अधिक देशों के बीच होता है, उस व्यापार को **बहुपक्षीय व्यापार** (Multilateral Trade) कहते हैं ।

कुछ देश अपनी आवश्यकताओं से अधिक वस्तुओं का उत्पादन करते हैं । जैसे सऊदी अरब, कुवैत आदि देशों में होने वाले खनिज तेल का उत्पादन इसी प्रकार कनाडा, संयुक्त राज्य आदि देशों में गेहूँ उत्पादन आदि । इन उत्पादनों की माँगवाले देशों में आपूर्ति की जाती है ।

● **आयात तथा निर्यात :** आयात तथा निर्यात अंतरराष्ट्रीय व्यापार की मूलभूत प्रक्रिया है । जब कोई देश किसी दूसरे देश से वस्तुएँ और सेवाएँ खरीदकर अपने देश में लाता है, तब उस क्रिया को आयात (Import) कहते हैं। इसी प्रकार जब कोई देश अपने पास होने वाले अधिक उत्पादन को आवश्यकता वाले देश को बेचते हैं, तब उस क्रिया को निर्यात (Export) कहा जाता है ।

करके देखिए

किसी भी एक आर्थिक वर्ष के लिए भारत और जापान के बीच होने वाले प्रमुख वस्तुओं का क्रय-विक्रय एवं उसके मूल्यों की जानकारी प्राप्त कर उस संबंध में दो परिच्छेद लिखिए ।

थोड़ा सोचिए तो

मानो कि आप व्यापारी है और आपको अपने उत्पादन को देश के अन्य राज्यों में बेचना है । उसी प्रकार यह उत्पादन आपको विश्व के कुछ देशों में भी बेचना है।

- ☞ इनमें से कौन-सा व्यापार करना सरल है?
- ☞ किस व्यापार में सीमाएँ आ सकती हैं?
- ☞ उसके कारणों को खोजिए ।

व्यापार संतुलन :

किसी देश के विशिष्ट कालावधि में आयात और निर्यात के कुल मूल्य में होने वाले अंतर को व्यापार संतुलन कहा जाता है । व्यापार संतुलन के निम्न प्रकार हैं –

- जब आयात मूल्य, निर्यात मूल्य की अपेक्षा अधिक होता है, तब **प्रतिकूल व्यापार संतुलन** होता है ।

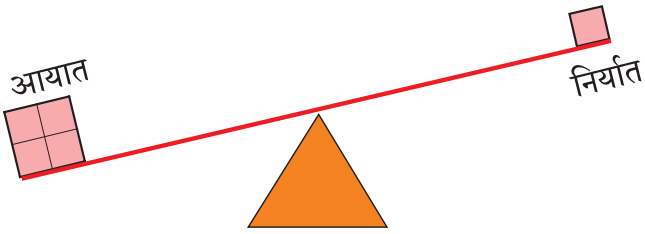

आकृति ९.३ (अ) : प्रतिकूल व्यापार संतुलन

- जब निर्यात मूल्य, आयात मूल्य की अपेक्षा अधिक होता है, तब **अनुकूल व्यापार संतुलन** होता है ।

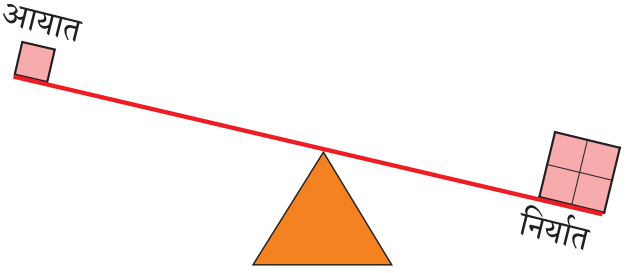

आकृति ९.३ (आ) : अनुकूल व्यापार संतुलन

- जब आयात और निर्यात मूल्य लगभग समान होते हैं, उसे 'संतुलित व्यापार' कहा जाता है ।

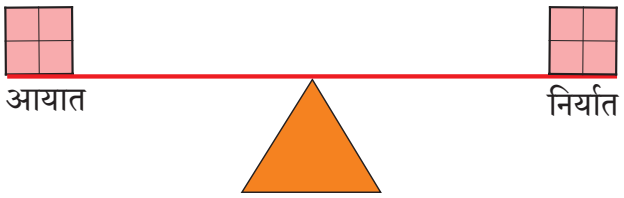

आकृति ९.३ (ब) : संतुलित व्यापार

अंतरराष्ट्रीय स्तर के व्यापारिक संगठन :

अंतरराष्ट्रीय व्यापार की प्रक्रिया स्थानीय स्वरूप के व्यापार की अपेक्षा कठिन होती है । यह व्यापार दो अथवा दो से अधिक देशों के बीच होता है । इस व्यापार पर देशों की अर्थव्यवस्था, सरकारी नीतियाँ, बाजारकेंद्र, कानून, न्याय व्यवस्था, मुद्रा, भाषा आदि घटकों का प्रभाव पड़ता है। देशों के बीच आपसी राजनैतिक संबंधों का भी अंतरराष्ट्रीय व्यापार पर प्रभाव पड़ता है । कभी-कभी व्यापार प्रक्रिया में रूकावटों के कारण आपसी देशों के बीच परस्पर संबंध व समझौतों पर भी विपरीत परिणाम पड़ता है । यह टालने के लिए अंतरराष्ट्रीय आर्थिक एवं व्यापार संगठन की आवश्यकता उत्पन्न हुई । आर्थिक स्थिति अलग-अलग होने के बाद भी व्यापार की प्रक्रिया सरल तथा न्यायपूर्ण हों, इसके लिए कुछ अंतरराष्ट्रीय आर्थिक संगठनों की निर्मिति हुई । यह व्यापारिक संगठन अंतरराष्ट्रीय व्यापार वृद्धि और सुलभता के लिए कार्य करते हैं । उनमें से कुछ आर्थिक संगठनों की जानकारी आगे तालिका में दी गई है ।

आसियान मुख्यालय

विश्व व्यापार संगठन मुख्यालय

संसार के कुछ आर्थिक संगठन

अंतरराष्ट्रीय संगठन के नाम	सदस्य देशों की संख्या तथा बोध चिह्न	मुख्यालय (देश)	उद्देश्य/कार्य
विश्व व्यापार संगठन (WTO) (World Trade Organization)	१६४	जिनेवा (स्वीजरलैंड)	• अंतरराष्ट्रीय व्यापार की चर्चा के लिए मंच उपलब्ध करना । • व्यापार से संबंधित मतभेद निपटाना । • राष्ट्र की व्यापार नीति की देखरेख करना । • विकासशील देशों के लिए तकनीकी सहायता एवं प्रशिक्षण उपलब्ध कराना ।
यूरोपियन संघ (EU) (European Union)	२८	ब्रुसेल्स (बेल्जियम)	• इस संगठन ने यूरोप में विभिन्न देशों की एकत्रित बाजार प्रणाली विकसित की है । • इसका उद्देश्य यूरोप में वस्तुओं, सेवाओं और पूँजी का स्वतंत्र संचार करना है । • सभी देशोंने वस्तुओं का लेन-देन करते समय सभी वस्तुओं का कर रद्द किया है । • सदस्य देशों के लिए 'यूरो' मुद्रा निश्चित की है ।
ओपेक (OPEC) (Organization of Petroleum Exporting Countries)	१३	वियेना (ऑस्ट्रिया)	• खनिज तेल के अंतरराष्ट्रीय व्यापार पर नियंत्रण रखना। • सदस्य देशों के बीच तेल उत्पादन तथा उसकी कीमत नियंत्रित करना । • तेल निर्यात में सुसूत्रता रखना ।
सार्क (SAARC) (South Asian Association for Regional Co-operation)	८	काठमांडू (नेपाल)	• दक्षिण एशिया के देशों की समान समस्याएँ समझते हुए उनके समाधान के लिए उपाय निकालना । • सदस्य देशों के बीच सामाजिक कल्याण, जीवन स्तर ऊँचा उठाने के लिए प्रादेशिक सहयोग बढ़ाना । • दक्षिण एशिया की अशांति को दूर करना ।
आसियान (ASEAN) (Association of South-East Asian Nations)	१०	जाकार्ता (इंडोनेशिया)	• दक्षिण पूर्व एशियाई देशों में आर्थिक विकास, उसी प्रकार सामाजिक और सांस्कृतिक सौहार्द बढ़ाना । • प्रादेशिक शांति को प्रोत्साहित करना । • सदस्य देशों को व्यापार वृद्धि के लिए सहुलियत देना।
आपेक (APEC) (Asia-Pacific Economic Co-operation)	२१	सिंगापुर	• एशिया-प्रशांत महासागर के क्षेत्र में मुक्त व्यापार और आर्थिक सहयोग करना । • सदस्य देशों के प्रादेशिक तथा तकनीकी विकास को प्रोत्साहन देना ।
ब्रिक्स (BRICS) (Brazil, Russia, India, China and South Africa.)	५	शांघाय (चीन)	• संगठन के देशों की अर्थव्यवस्था वृद्धि के लिए निधि उपलब्ध करना । • आपस में आर्थिक सहयोग बढाना । • आर्थिक सुरक्षा मजबूत करना ।

मानचित्र से मित्रता

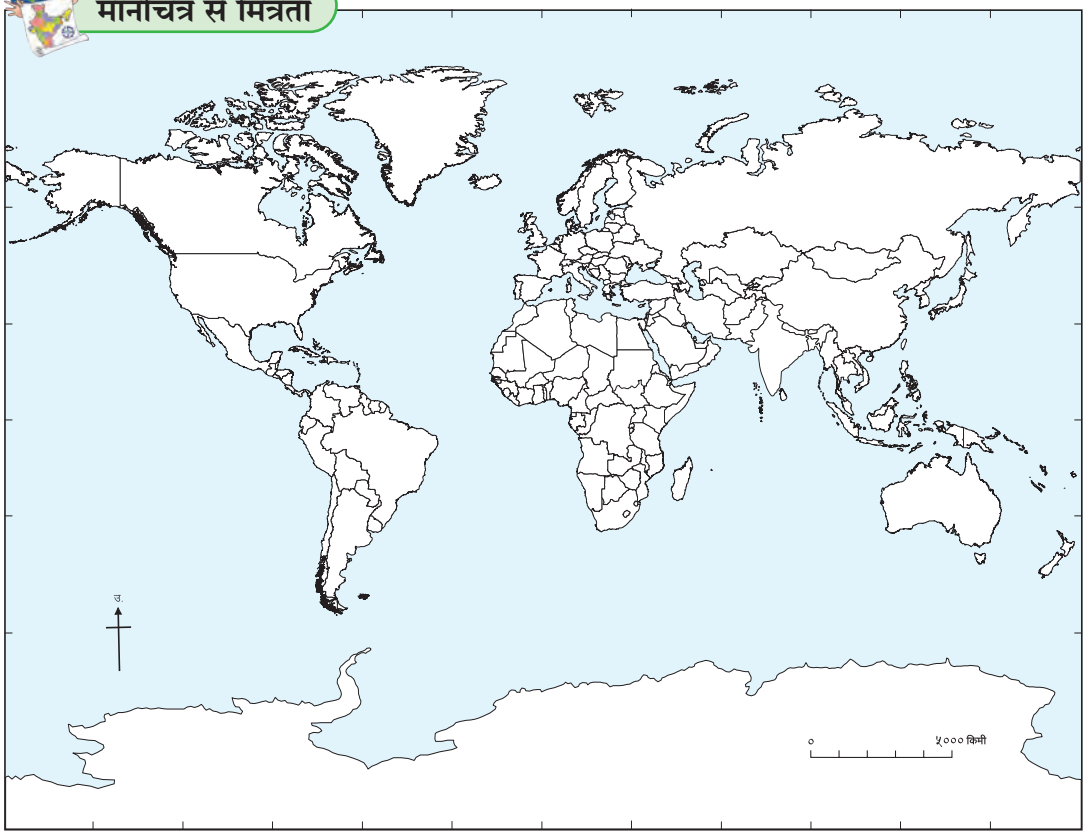

आकृति ९.४ : संसार मानचित्र आरेखन

अंतरजाल की सहायता से नीचे दिए गए संगठन के सदस्य देशों के नाम ढूँढ़िए । ये देश आकृति ९.४ के प्रारूप में संगठन के अनुसार अलग रंग का उपयोग कर दिखाइए ।

- ओपेक (OPEC) सदस्य देश
- सार्क (SAARC) सदस्य देश

थोड़ा विचार कीजिए

☞ संपूर्ण विश्व में एक ही मुद्रा का प्रचलन हो तो क्या होगा ?

विपणन :

बताइए तो

धोंडिबा अपने खेत में बहुत मेहनत करके उच्च श्रेणी की सब्जियाँ तथा अन्य कृषि उत्पादन करता है परंतु उसे बाजार में उसके अनुसार कीमत नहीं मिलती ।

महाविद्यालय में पढ़ने वाले धोंडिबा के पुत्र ने यह स्थिति देखी और उसने सर्वप्रथम कृषि उत्पादन को स्वच्छ साफ करके उसे अच्छी तरह पैक किया । उसके बाद शहर के सुपरमार्केट और मॉल से संपर्क किया । उसकी कृषि उत्पादन वस्तु की गुणवत्ता को देखकर सुपरमार्केट/मॉल ने उस कृषि वस्तु का विज्ञापन देकर मॉल में विक्रय के लिए रखा । वर्तमान में धोंडिबा की कृषि उत्पादित वस्तुएँ पहले की अपेक्षा अधिक मूल्य में बिकती हैं ।

- धोंडिबा के कृषि उत्पन्न वस्तुओं को अच्छा मूल्य किस कारण मिलने लगा ?
- उसके लिए धोंडिबा के पुत्र को क्या करना पड़ा ?
- परिसर में कृषकों के कृषि उत्पन्न को उचित मूल्य मिले, इसके लिए आप क्या उपाय बताएँगे ?

भौगोलिक स्पष्टीकरण

किसी वस्तु का उचित प्रकार से प्रस्तुतीकरण महत्त्वपूर्ण होता है । वस्तु की कीमत, उसकी गुणवत्ता, श्रेणी, उसी प्रकार उपभोक्ता के समक्ष उस वस्तु को किस प्रकार रखा जाता है, यह महत्त्वपूर्ण है ।

धोंडिबा के कृषि-माल में इसकी कमी थी; वह कमी धोंडिबा के पुत्र ने देखकर दूर कर दी । इस प्रकार औद्योगिक उत्पादन और कृषि माल पर प्रक्रिया कर

उपभोक्ता की दृष्टि में वस्तु के स्तर में वृद्धि होती है। इससे वस्तु की कीमत तो मिलती ही है, साथ ही ऐसी वस्तुओं की माँग भी बढ़ जाती है ।

करके देखिए

जो वस्तुएँ आप प्रतिदिन उपयोग में लाते हैं उनमें से कुछ वस्तुओं की सूची दी है । उन वस्तुओं के सामने आप जिस कंपनी की वस्तु का उपयोग करते हैं, उसके उत्पादन का नाम लिखिए और जानकारी का स्रोत भी लिखिए ।

अ. क्र.	वस्तु	वस्तु का नाम	उत्पादक का नाम	जानकारी का स्रोत
(१)	दाँत माँजने की पाऊडर			
(२)	चाय अथवा कॉफी पाऊडर			
(३)	नहाने का साबुन			
(४)	बालों का तेल			
(५)	बिस्कुट			

उपरोक्त जानकारी के आधार पर आपको ऐसा ध्यान में आएगा कि हम जो वस्तुएँ उपयोग में लाते हैं, उनकी गुणवत्ता महत्त्वपूर्ण होती है । उसी प्रकार उसके विज्ञापन का भी हमपर प्रभाव पड़ता है । प्रत्येक को उत्पादन के संबंध में संपूर्ण जानकारी नहीं होती परंतु उस वस्तु का यदि कोई उपयोग करते दीखे, उसका आकर्षक विज्ञापन दीखे, तो उत्पादन के विषय में पूछताछ करने पर या बाजार में देखने पर ऐसा ध्यान में आता है कि यह उत्पादन हमारे उपयोगी हो सकता है । तब हम वह वस्तु बाजार से खरीदते हैं । ये सभी कार्य विपणन (Marketing) की क्रिया से संभव होता है । उचित विपणन से ही व्यापार में वृद्धि होती है ।

विपणन का महत्त्व :

आधुनिक औद्योगिक समाज रचना, वैश्वीकरण उत्पादन के अनेक विकल्प तथा उपलब्धता यह वर्तमान व्यापार की संरचना है । इस पार्श्वभूमि पर व्यापार की विपणन व्यवस्था अत्यधिक महत्वपूर्ण होती है । विपणन के द्वारा अनुशासनबद्ध पद्धति से व्यापार में वृद्धि होती है। एक ही समय में उत्पादन को बड़े पैमाने पर वितरित किया जाता है । उत्पादन को अधिक-से-अधिक उपभोक्ताओं तक पहुँचाया जाता है । उत्पादन का विक्रय मूल्य भी बढ़ता है। आज के युग में विपणन यह व्यापार व्यवस्था का एक मुख्य आधार है ।

विज्ञापन के माध्यम से उपभोक्ता में आवश्यकता की भावना निर्माण की जाती है । अधिक से अधिक उपभोक्ताओं तक पहुँचना, उत्पादन की ओर उपभोक्ता को आकर्षित करना और उपभोक्ता को वस्तु की खरीदारी के लिए प्रोत्साहित करना, यह विपणन का मुख्य उद्देश्य होता है ।

विपणन व्यवस्था पर सूचना प्रौद्योगिकी तथा संचार के साधनों का बहुत प्रभाव पड़ता है । सूचना प्रौद्योगिकी क्रांति के कारण पूरा विश्व एक बड़ा बाजार

इसे सदैव याद रखिए

उत्पादक से उपभोक्ता तक वस्तु के पहुँचने तक एक प्रवाह तैयार होता है । इस प्रवाह के व्यावसायिक कार्यों को एकत्र रूप से विपणन कहा जाता है । वस्तु का मूल्य, विक्रय वृद्धि, विज्ञापन और वितरण यह विपणन के प्रमुख घटक हैं ।

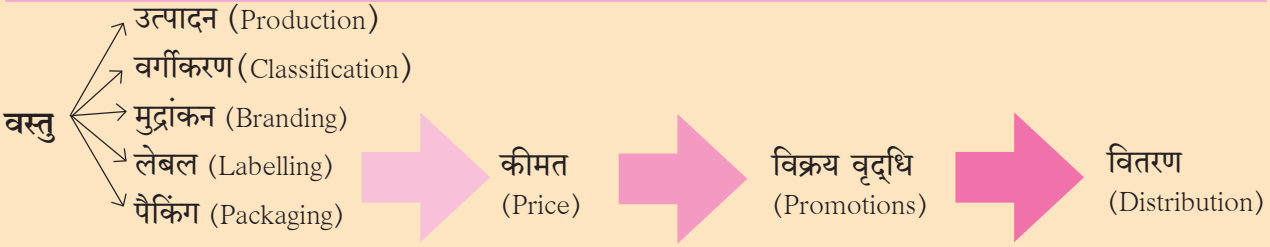

जैसे,

चावल
- बासमती,
- अखंडित, दो-टुकड़ा (दुबार) आदि ।
- कंपनी का नाम, चिह्न, नंबर ।
- उत्पादन का स्तर, वर्णन, जाँच के अनुसार, मूल्य, विज्ञापन
- आकर्षक पैकिंग ।

केंद्र बन गया है । अंतरजाल के द्‌वारा विश्व के विविध देशों के उत्पादन की जानकारी प्राप्त होती है । इससे उपभोक्ता के पास विविध विकल्प होते हैं । उपभोक्ता अंतरजाल की सुविधा के कारण 'ऑनलाइन ट्रेडिंग,' 'इ-मार्केटिंग' जैसे साधन उपयोग में लाता है ।

उत्पादन का विज्ञापन करते समय झूठ, फँसाने वाले अथवा अतिशियोक्तिपूर्ण विधानों का उपयोग कर ग्राहकों को फँसाना, अन्य वस्तुओं के दोष बताना आदि के कारण कई बार विज्ञापन की विश्वसनीयता खो देते हैं । अत: विज्ञापन दिखाते समय योग्य नीतियों का पालन करना आवश्यक है । उपभोक्ता को ऐसे विज्ञापनों से सावधान रहना चाहिए । इसके लिए उपभोक्ता संरक्षण कानून बनाया गया है ।

अपनी आवश्यकता ध्यान में रखकर उचित मूल्य में वस्तु की खरीदने की वृत्ति उपभोक्ता में होनी आवश्यक है ।

J1IGRC

स्वाध्याय

प्रश्न १. नीचे दिए प्रदेशों के बीच होने वाले व्यापार का वर्गीकरण कीजिए ।

(अ) महाराष्ट्र और पंजाब (ई) चीन और कैनाडा

(आ) भारत और जापान (उ) भारत और यूरोपीय संघ

(इ) लासलगाँव और पुणे

प्रश्न २. निम्न कथनों के लिए आयात तथा निर्यात में से उचित शब्द लिखिए ।

(अ) भारत यह मध्यपूर्व एशिया के देशों से खनिज तेल क्रय करता है । [ ]

(आ) कैनाडा से एशियाई देशों में गेहूँ विक्रय के लिए भेजा जाता है । [ ]

(इ) जापान, आपेक (APEC) देशों को यंत्र सामग्री भेजता है । [ ]

प्रश्न ३. निम्न में से गलत कथन सुधार कर फिर से लिखिए।

(अ) भारत यह स्वयंपूर्ण देश है ।

(आ) जहाँ किसी एक वस्तु का उत्पादन अतिरिक्त होता है, वहाँ उस वस्तु की माँग नहीं होती ।

(इ) स्थानीय व्यापार की तुलना में अंतरराष्ट्रीय व्यापार की प्रक्रिया सरल तथा आसान होती है।

(ई) दक्षिण एशिया के देशों के बीच आर्थिक विकास, सामाजिक तथा सांस्कृतिक समझौते बढ़ाने के लिए सार्क संगठन कार्य करता है ।

प्रश्न ४. निम्न उदाहरणों से व्यापार का प्रकार ढूँढकर लिखिए ।

(अ) सृष्टि किराना दुकान से आधा किलो शक्कर खरीदकर लाई ।

आ) महाराष्ट्र के किसानों से सूरत के व्यापारियों नें कपास खरीदा ।

इ) समीर ने भारतीय खेती के अनार आस्ट्रेलिया निर्यात किए ।

ई) सदाभाऊ मार्केट यार्ड से अपनी दुकान में विक्रय के लिए १० बोरियाँ गेहूँ और ५ बोरियाँ चावल खरीदकर लाए ।

प्रश्न ५ निम्न प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए ।

अ) व्यापार के प्रकारों का वितरण दिखाने वाली प्रवाह आकृति तैयार कीजिए ।

आ) व्यापार संतुलन प्रकार में अंतर बताइए ।

इ) विश्व व्यापार संगठन के उद्‌देश्य बताइए ।

ई) ओपेक (OPEC) तथा आपेक (APEC) इन व्यापार संगठनों के कार्य का अंतर लिखिए ।

उ) एशिया महाद्‌वीप के महत्त्वपूर्ण व्यापारिक संगठन के कार्य लिखिए ।

ऊ) कृषक की दृष्टि से विपणन का महत्त्व लिखिए।

प्रश्न ६. नीचे दी गई तालिका में वर्ष २०१४-१५ के कुछ देशों के आयात-निर्यात मूल्य दस लाख यू. एस. डालर में दिया गया है । निम्न सांख्यिकीय जानकारी के आधार पर संयुक्त स्तंभालेख तैयार कीजिए । स्तंभालेख का ध्यानपूर्वक वाचन कीजिए और निम्न देशों के व्यापार संतुलन के विषय में लिखिए ।

देश	निर्यात मूल्य	आयात मूल्य
चीन	२१४३	१९६०
भारत	२७२	३८०
ब्राजील	१९०	२४१
संयुक्त राज्य	१५१०	२३८०

उपक्रम :

शिक्षकों की सहायता से और मार्गदर्शन के अनुसार निम्न उपक्रम कक्षा में कीजिए ।

किसी उत्पादन के लिए उत्कृष्ट विज्ञापन तैयार करके आपके उत्पादन के विज्ञापन को कक्षा में अधिक-से-अधिक पसंदगी प्राप्त कीजिए ।

***